SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

कुषाणकालीन अर्थव्यवस्थाः एक ऐतिहासिक अध्ययन

चन्दु कुमारी, शोधार्थी, **नवनीत कुमार दांगी,** शोधार्थी, इतिहास विभाग
अशोक कुमार मंडल, Ph.D., इतिहास विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
चन्दु कुमारी, नवनीत कुमार दांगी
अशोक कुमार मंडल, Ph.D.

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 30/11/2023
Revised on : -----
Accepted on : 07/12/2023
Plagiarism : 00% on 30/11/2023

शोध सार

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में कुषाणों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। कुषाण वंश के राजाओं ने मौर्य वंश के बाद आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कुषाणों के समय में आर्थिक क्षेत्र में विशेष रूप से उन्नति देखने को मिलती है। मध्य एशिया के साथ भारतीयों का संबंध और घनिष्ठ हो गया तथा व्यापार–वाणिज्य की प्रगति हुई। व्यापार वाणिज्य में प्रगति का प्रमुख कारण यह था कि कुषाण राज्य से ही होकर दो प्रमुख व्यापारिक मार्ग गुजरते थे एक उत्तरापथ एवं दूसरा रेशम मार्ग। रेशम मार्ग से कुषाणों को बहुत सारा धन कर के रूप में मिलता था। कुषाण वंश का सबसे प्रसिद्ध राजा कनिष्क था जिसने मध्य एशिया से लेकर पटना और मृगुकच्छ या भड़ौच तक अपने साम्राज्य का विस्तार किया। मध्य एशिया तक साम्राज्य विस्तार होने से रोमन साम्राज्य और कुषाण साम्राज्य का संबंध काफी सुदृढ़ हुआ। रेशम मार्ग पर अधिकार के कारण चीनी मिट्टी के बर्तन और भारत के बने रेशम के कपड़े हांथी दांत, मसाले, कीमती सुती वस्त्र इत्यादि रोम जाने लगा और रोम का सोना बड़ी मात्रा में कुषाण साम्राज्य में आने लगा। सोने की उपलब्धता के कारण बड़ी संख्या में सोने के सिक्के जारी किए गए। ये सोने का सिक्का रोम के सिक्का डिनारियस के अनुकरण पर ढाले गए थे। यूनानियों का नकल करके सिक्कों पर देवी–देवताओं के चित्र का अंकन किया गया था। व्यापार वाणिज्य में विकास के साथ–साथ कृषि उद्योग धंधा में भी पर्याप्त विकास देखने को मिलता है। कृषि अर्थव्यवस्था की प्रमुख आधार थी। विभिन्न फसलों और भूमि के वर्गीकरण से पता चलता है कि कृषि पर विशेष ध्यान दिया जाता था। पशुपालन को भी राज्य के द्वारा प्रोत्साहित किया जाता था। अकाल से निपटने के लिए बड़ी मात्रा में अन्न भंडारण किया जाता था जिसे बाद में

उचित रूप से अनाज का वितरण किया जाता था। उद्योग धंधा से भी राज्य को काफी आय होता था। धातुओं से कई प्रकार के समान बनते थे। धातुकरों में लुहार, सुई निर्माता, ताम्बे की वस्तुएं बनाने वाले सीसे, कांच, टिन, पीतल, हांथी दांत और लोहे आदि की वस्तुएं बनाने वाले थे।

मुख्य शब्द

रेशम मार्ग, व्यापार–वाणिज्य, स्वर्णकार, पष्टीक, मधुलिका, खालिक–चक्र.

कुषाणों की अर्थव्यवस्था

प्राचीन भारत में कुषाण काल आर्थिक दृष्टि से सर्वाधिक समृद्धि का काल माना जाता है। कनिष्क ने विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी इसके साम्राज्य में पूर्व में चीन तथा पश्चिम में पर्थिया स्थित थे। इस काल में आर्थिक जीवन की महत्वपूर्ण विशेषता व्यापार था जिसमें भारत का मध्य एशिया तथा पाश्चात्य विश्व के साथ घनिष्ठ व्यापारिक संबंध की स्थापना की।[1] व्यापार वाणिज्य के साथ–साथ उद्योग धंधा, कृषि पशुपालन भी प्रमुख था।

कृषि

कुषाणकालीन अर्थव्यवस्था में कृषि का विशेष महत्व था। इस काल में कृषि की स्थिति लगभग मौर्य काल के समान ही था। कृषि पर राज्य का नियंत्रण नहीं था। वैश्य वर्ण विभिन्न उद्योग धंधा तथा व्यापार के साथ–साथ कृषि कार्य में हल बैल की सहायता ली जाती थी। हल के अतिरिक्त अन्य कृषि उपकरण हासिया, कुदाल, फावड़ा इत्यादि का भी प्रयोग किया जाता था। बड़ी संख्या में मिट्टी के बर्तन मिलने से पता चलता है कि अन्न रखने के लिए प्रयोग में लाया जाता होगा। इस काल में कई प्रकार की फसलों की खेती की जाती थी जिसमें धान, उड़द, कुरथी, यव, मुंग, गेहूं, मसूर, गन्ना आदि प्रमुख थी। पांच प्रकार के चावल कृष्ण, व्रीहि, महाव्रीहि, हायनक, यवक और पष्टीक का उल्लेख मिलता है। इस काल के चरक संहिता में चावल की पंद्रह किस्मों का उल्लेख मिलता है। सुमुत संहिता में गेहूं की दो किस्मों मधुलिका और नंदा मुखी का उल्लेख मिलता है।[2] इसके अतिरिक्त फलों में अंगुर, सेब, आम, अंजीर नारंगी, बेर की खेती की जाती थी। सन, कपास और अलसी भी प्रमुख कृषि फसल थी। अनाज और फल के अतिरिक्त मसालों का भी वर्णन मिलता है। इस काल में सारसों धनिया, इलायची, लवंग, दालचीनी, कालीमिर्च आदि प्रमुख मसाले थे।[3] कृषि कार्य सुचारू रूप से चलता रहता था। इस काल में बाहरी आक्रमणों का खतरा बना रहता था लेकिन आक्रमण के दौरान फसलों को नष्ट नही के बराबर किया जाता था। व्यापारिक और राजाओं के द्वारा कृषि भूमि में विस्तार करने के लिए भूमि दान में दी जाती थी। फसलों को नुकसान पहुंचाने या चोरी करने पर शासन व्यवस्था में दण्ड की व्यवस्था की गई थी।

कृषि योग्य भूमि का वर्गीकरण दो भागों में किया गया था, प्रथम क्षेत्रिक और द्वितीय आसविक क्षेत्रिय वह भूमि होती थी जिसमें फसल को खेत में बोया जाता था। आसविक वन भूमि थी जिस पर फसल वन में बोया जाता था। इससे पता चलता है कि कृषि भूमि के विस्तार के लिए वनों को भी काटने की व्यवस्था की गई थी। इसके अतिरिक्त भूमि का विभाजन सिंचित भूमि और असिचित भूमि के रूप में भी किया गया था। राजा का नैतिक कर्तव्य माना जाता था कि उसके द्वारा सिंचाई की व्यवस्था की जानी चाहिए। जहाँ पर वर्षा के अभाव के कारण खेती नहीं हो पाती थी उस भुमि को केतु भूमि कहा जाता था। कनिष्क द्वितीय के आरा अभिलेख से ज्ञात होता है कि दासपेठ नामक एक व्यक्ति ने आम जनता की भलाई के लिए कुंआ खुदवाया था जिसे बाद में राजा ने उसके लिए एक लाल मुद्राएं दान में दी थी।[4] उस काल में राज्य द्वारा सिंचाई व्यवस्था के कई अन्य प्रमाण भी देखने को मिलता है। राजा खारवेल ने नंदों के द्वारा बनाई गई नहर का पुनः जिर्णोद्वार करवाया। एक अन्य शासक रूद्रदामन ने भी सुदर्शन झील को फिर से बनवाया ताकि लोग सुगमता से सिंचाई कर सके।

पशुपालन

कुषाण काल में पशुपालन भी अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार स्तंभ था। राज्य के द्वारा पशुपालन के लिए भी लोगों को प्रोत्साहन किया जाता था। पशुपालन में घोड़े का विशेष महत्व था क्योंकि सेनाओं के द्वारा प्रयोग किया

जाता था। उत्तम श्रेणी के अश्व पालन कर ज्यादा जोर दिया जाता था। इसके अलावा सामान्य रूप से गौ पालन किया जाता था। खेती में बैल का ही प्रयोग किया जाता था इस कारण किसान खेती के साथ–साथ पशुपालन भी [5] कृषि और पशुपालन दोनों अपने आप में एक दूसरे के पुरक हैं। कुषाण काल में चमड़े से निर्मित वस्तुओं का प्रयोग बड़ी भाग में किया जाता था जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि चमड़ा प्राप्त करने के लिए भी बड़े पैमाने पर पशुपालन किया जाता होगा।

व्यापार

कुषाण काल में व्यापार अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार स्तंभ था। इस काल में व्यापार विकसित स्थिति में थी। रेशम मार्ग पर इनका नियंत्रण था जिससे व्यापार सुगमा के साथ होता था। अन्य देशों के व्यापारियों से भी कर के रूप में बहुत सारा धन प्राप्त होता था। बाह्य व्यापारिक मार्ग पर नियंत्रण के साथ–साथ देश के आंतरिक व्यापारिक मार्गों पर भी नियंत्रण था। इसकी रख–रखाव व सुरक्षा का सुनिश्चित किया गया था ताकि व्यापारियों को कोई परेशानी न हो। मानसुनी हवाओं (45 ई.) के खोज के बाद जल मार्ग से भी व्यापार होने लगा लेकिन जल मार्ग से व्यापार करना शुरूआती दिनों में जोखिम से भरा होता था। मौसम के बारे में बहुत जानकारी नहीं होने से व्यापारियों को परेशानी का सामना करना पड़ता था।

इस काल में रोम से भारत का विशेष व्यापारिक संबंध था। रोम के सिक्के भारत के पश्चिमी समुद्र तट अरिकाभेदु नामक क्षेत्र से प्राप्त हुआ है।[6] इसके अतिरिक्त भारतीय व्यापारियों का संबंध चीन तिब्बत अफगानिस्तान मिस्त्र, अरब आदि देशों से भी था। कुषाणकालीन अर्थव्यवस्था के लिए अंतर्देशीय मार्ग मौर्य काल से ही विद्यमान थे और कुषाण काल में इसका भरपुर प्रयोग किया जाता था। मौर्य काल में पाटलीपुत्र से नेपाल तक कौशाम्बी से लेकर उज्जैन तक और मथूरा से लेकर बैक्ट्रीया तक मार्ग बने हुए थे।[7] इसमें एक उत्तरापथ तथा दूसरा दक्षिणापथ कहलाता था।

व्यापार मुख्यतः दो प्रकार का होता था, पहला आंतरिक व्यापार और दूसरा विदेशी वयापार। आंतरिक व्यापार के लिए देश के भीतर सड़कों का जाल बना हुआ था जिससे व्यापारी आते–जाते थे और वस्तुओं का आपस में लेन–देन करते थे। उत्तर भारत के प्रमुख व्यापारिक केन्द्र में मथूरा, बनारस, कौशाम्बी, पाटलीपुत्र, उज्जैन तथा दक्षिण भारत के व्यापारिक केन्द्र प्रतिष्ठान (पैठन) नासिक आदि थे।

विदेशी व्यापार इस काल का अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण विशेषता थी। मध्य एशिया तथा पाश्चात्य विश्व के साथ घनिष्ट व्यापारिक संबंध था। विदेशी व्यापार में रेशम मार्ग की प्रमुख भूमिका थी। कुषाण शासकों ने चीन, ईरान और पश्चिम ऐशिया तक जाने वाले रेशम मार्ग को अपना नियंत्रण में रखा जो कुषाणों की आमदनी का प्रमुख साधन था। रोम के साथ विशेष व्यापारिक संबंध था। बड़ी मात्रा में वस्तुओं का आयात और निर्यात किया जाता था। निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में दालचीनी, इलायची, जटामसी, कालीमिर्च, अदरक, चावल, दाल, कपास, आबनूस, कपास से बनी चीजें, सूती वस्त्र, लकड़ी, चमड़ा, रेशम, लाख, मोती, शंख आदि थे। आयात की जाने वाली वस्तुएं में चांदी, सोना, तांबा, टिन, शराब, इत्यादि प्रमुख थी।[8] व्यापार भारत के पक्ष में था, क्योंकि आयात से ज्यादा निर्यात किया जाता था। प्लिनी अपनी पुस्तक नेचुरल हिस्ट्री में रोम के धन की बर्बादी पर दुख व्यक्त करते हुए कहता है कि ''रोम प्रतिवर्ष भारत से विलासिता की सामग्रियां मांगने में दस करोड़ सेस्टर्स व्यय करता है।''[9] वह इसके लिए अपने देशवासियों का निंदा करता है। भारत की इन विलासिता की सामानों के बदले रोम से बड़ी मात्रा में स्वर्ण मुद्राएं प्राप्त करता था।

उद्योग धंधा

कुषाण कालीन अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण पहलू उद्योग धंधा भी था। शिल्प उद्योग इस समय उन्नत अवस्था में था। धातुओं के तथा पत्थरों के विभिन्न प्रकार के शिल्प सामाग्रियां बनाई जाती थी। भारत में शिल्प सामाग्रियां सिंधु घाटी की सभ्यता से ही मिलने लगता है लेकिन इस काल तक आते–आते बहुत सारे बदलाव एवं तकनीक के माध्यम से और भी अधिक परिस्कृत हो चुका था। इस समय के पत्थर के कई देवी–देवताओं की मूर्तियों

का अवशेष मिलता है जो मुख्यतः मथुरा कला और गांधार कला शैली में बने हैं। धातुओं से भी बहुत प्रकार की वस्तुओं का निर्माण किया जाता था। कुषाण काल में धातु उद्योग अच्छी अवस्था था। लोहा, तांबा, सोना, चांदी का खनन और उससे विभिन्न वस्तुओं का निर्माण किया जाता था। तक्षशिला और मथूरा उद्योग धंधा का प्रमुख केन्द्र बिन्दु था। मथूरा में एक विशेष प्रकार का वस्त्र बनता था जिसे शतक कहा जाता था।

कुषाण काल में उद्योग राजकीय नियंत्रण से स्वतंत्र थे। उद्योग की लम्बी सूची इस समय के विभिन्न साहित्य ग्रंथों में मिलती है। दीर्घ निकाय में 24 और मिलिन्द पन्दो में 75 उद्योगों की चर्चा है जिसमें 60 उद्योग विविध विशेषता वाले थे। इनमें से भी 8 शिल्प धातु उत्पादों सोना, चाँदी, टीन, सीसा, ताम्बा, पीतल, लोहा व हीरा जवाहरातों के काम से जुड़े थे। दिव्यावदान में 'खालिक चक्र' (तेल पेरने के कोल) भी उल्लेख मिलता है।[10] कोसल, कलिंग, विदर्भ, कश्मीर हीरे के लिए प्रसिद्ध थे। मगध वृक्षों से बने रेशों के लिए प्रसिद्ध था। वाराणसी रेशम, मसलिन तथा चंदन की लकड़ी के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध था। गांधार लाल रंग के कम्बल के लिए प्रसिद्ध था। स्वर्णकार सोने के विभिन्न प्रकार के शिल्प के निर्माता थे। कुम्भकार मिट्टी के विभिन्न प्रकार के वस्तुओं के निर्माता थे। करीम नगर तथा माल कोण्डा लौह–इस्पात उद्योग के लिए प्रसिद्ध थे।[11] इस प्रकार कुषाण काल में विविध प्रकार के उद्योग धंधा विकसित अवस्था में होने का प्रमाण मिलता है।

सिक्का

कुषाण काल में सिक्कों का व्यापक रूप से प्रचलन में था। व्यापार वाणिज्य के क्षेत्र में सिक्कों का नियमित रूप से प्रयोग होता था। कुषाणों के द्वारा पहली बार प्रथम से चौथी शताब्दियों के बीच बड़े पैमाने पर स्वर्ण सिक्के जारी किए गए। चांदी के सिक्के इनके द्वारा कम जारी किए गए। हालांकि उन्होंने निम्नतर मूल्यों के तांबे के सिक्के बड़ी संख्या में जारी किए।[12] विविध प्रकार के सिक्कों से इस काल में अच्छी भौतिक अर्थव्यवस्था का बोध होता है, क्योंकि कुषाण सिक्कों पर राजा की तस्वीर और नाम का अंकन भी बड़े पैमाने पर किया गया है। कुछ सिक्कों पर रोमन देवी देवताओं के चित्र भी अंकित है।[13] बाद में गुप्त शासकों ने कुषाणों का अनुकरण करते हुए बड़ी मात्रा में सोने के सिक्के जारी किए।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कृषि उद्योग धंधा, व्यापार–वाणिज्य एवं सिक्कों के अध्ययन से स्पष्ट है कि कुषाणों का शासन काल आर्थिक समृद्धि एवं सम्पन्नता का काल था। उद्योग धंधे और व्यापार वाणिज्य बहुत ही उन्नत दशा में था। रेशम मार्ग पर नियंत्रण होने से बड़ी मात्रा में राज्य का आय प्राप्त होता था। इस धन से राज्य की आर्थिक दशा बहुत ही सुदृढ़ हो गयी थी। भारतीय व्यापारी भी बढ़–चढ़ कर व्यापार में बिचौलिए के रूप में काम करते थे। उद्योग धंधों के बहुत सारे प्रसिद्ध केन्द्र थे। ये बाद में बड़े–बड़े नगर के रूप में विकसित हो गया। इन्हीं उपर्युक्त कारणों से आर. एस. शर्मा जैसे कुछ विद्वान आर्थिक समृद्धि की दृष्टि से प्राचीन भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग मानते हैं।

संदर्भ सूची

1. श्रीवास्तव के. सी., (2019) *प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति,* युनाईटेड बुक डियो, इलाहाबाद, पृष्ठ 349।
2. कुमार धनंजय, (2009) *कुषाण कालीन अर्थव्यवस्था,* एम. पब्लिकेशन, वाराणसी, पृष्ठ 26।
3. वही, पृष्ठ 50।
4. वही, पृष्ठ 52।
5. महाजन वी. डी., (2015) *प्राचीन भारत का इतिहास,* एस. चन्द्र एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली, पृष्ठ 286।
6. पाण्डेय रामनिहोर, (2000) *दक्षिण भारत का राजनीतिक एवं संस्कृति इतिहास,* इलाहाबाद, पृष्ठ 34।

7. कुमार धनंजय, पूर्वोक्त, पृष्ठ 34।
8. वही, पृष्ठ 54।
9. वही, पृष्ठ 54।
10. सिंह पप्पू प्रजापत, (2021) *प्राचीन भारत का नवीन सर्वेक्षण,* रायल पब्लिकेशन, जोधपुर, पृष्ठ 454।
11. वही, पृष्ठ 454।
12. सिंह उपिन्दर, (2018) *प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास,* पियर्सन, दिल्ली, पृष्ठ 52।
13. वही, पृष्ठ 52।

****